

3 John

3 यूहन्ना

¹ Greetings from the Elder.

To my dear friend Gaius, a person I truly love.

² My dear friend, I know that you are doing well spiritually. So I pray that everything else is going well with you and that you are enjoying good health. ³ Some believers came and told me about the truth in your life. They told me that you continue to follow the way of truth. This made me very happy. ⁴ It always gives me the greatest joy when I hear that my children are following the way of truth.

⁵ My dear friend, it is good that you continue to help the believers. They are people you don't even know. ⁶ They told the church about the love you have. Please help them to continue their trip. Help them in a way that will please God. ⁷ They went on their trip to serve Christ. They did not accept any help from people who are not believers. ⁸ So we should help them. When we help them, we share with their work for the truth.

⁹ I wrote a letter to the church, but Diotrephes will not listen to what we say. He always wants to be the leader. ¹⁰ When I come, I will talk with him about what he is doing. He lies and says evil things about us, but that is not all. He refuses to welcome and help the believers who travel there. And he will not let others help them. If they do, he stops them from meeting with the church anymore.

¹¹ My dear friend, don't follow what is bad; follow what is good. Whoever does what is good is from God. But whoever does evil has never known God.

¹² Everyone says good things about Demetrius, and the truth agrees with what they say. Also,

¹ यूहन्ना की ओर से:

प्रिय मित्र, गयुस के नाम जिसे मैं सत्य में सहभागी के रूप में प्रेम करता हूँ।

² हे मेरे प्रिय मित्र, मैं प्रार्थना करता हूँ कि तू जैसे आध्यात्मिक रूप से उन्नति कर रहा है, वैसे ही सब प्रकार से उन्नति करता रह और स्वास्थ्य का आनन्द उठाता रह। ³ जब हमारे कुछ भाइयों ने मेरे पास आकर सत्य के प्रति तुम्हारी निष्ठा के बारे में बताया तो मैं बहुत आनन्दित हुआ। उन्होंने मुझे यह भी बताया कि तुम सत्य के मार्ग पर किस प्रकार चल रहे हो। ⁴ मुझे यह सुनने से अधिक आनन्द और किसी में नहीं आता कि मेरे बालक सत्य के मार्ग का अनुसरण कर रहे हैं।

⁵ हे मेरे प्यारे मित्र, तुम हमारे भाईयों के हित में जो कुछ कर सकते हो, उसे विश्वास के साथ कर रहे हो। यद्यपि वे लोग तुम्हारे लिए अनजाने हैं! ⁶ जो प्रेम तुमने उन पर दर्शाया है, उन्होंने कलीसिया के सामने उसकी साक्षी दी है। उनकी यात्रा को बनाए रखने के लिए कृपया उनकी इस प्रकार सहायता करना जिसका समर्थन परमेश्वर करे। ⁷ क्योंकि वे मसीह की सेवा के लिए यात्रा पर निकल पड़े हैं तथा उन्होंने विधर्मियों से कोई सहायता नहीं ली है। ⁸ इसलिए हम विश्वासियों को ऐसे लोगों की सहायता करनी चाहिए ताकि हम भी सत्य के प्रति सहकर्मी सिद्ध हो सकें।

⁹ एक पत्र मैंने कलीसिया को भी लिखा था किन्तु दियुत्रिफेस जो उनका नेता बनना चाहता है। ¹⁰ वह जो कुछ हम कहते हैं, उसे स्वीकार नहीं करेगा। इस कारण यदि मैं आऊँगा तो बताऊँगा कि वह क्या कर रहा है। वह झूठे तौर पर अपशब्दों के साथ मुझ पर दोष लगाता है और इन बातों से ही वह संतुष्ट नहीं है। वह हमारे बंधुओं के प्रति आदर सत्कार नहीं दिखाता है बल्कि जो ऐसा करना चाहते हैं, उन्हें भी बाधा पहुँचाता है और उन्हें कलीसिया से बाहर धकेल देता है।

¹¹ हे प्रिय मित्र, बुराई का नहीं बल्कि भलाई का अनुकरण करो! जो भलाई करता है, वह परमेश्वर का है! जो बुराई करता है, उसने परमेश्वर को नहीं देखा।

¹² दिमेत्रियुस के विषय में हर किसी ने साक्षी दी है। यहाँ तक कि स्वयं सत्य ने भी। हमने भी

we say good about him. And you know that what we say is true.

¹³I have many things I want to tell you. But I don't want to use pen and ink. ¹⁴I hope to visit you soon. Then we can be together and talk. ¹⁵Peace to you. The friends here with me send their love. Please give our love to each one of the friends there.

उसके विषय में साक्षी दी है। और तुम तो जानते ही हो कि हमारी साक्षी सत्य है।

¹³तुझे लिखने के लिए मेरे पास बहुत सी बातें हैं किन्तु मैं तुझे लेखनी और स्याही से वह सब कुछ नहीं लिखना चाहता। ¹⁴बल्कि मुझे तो आशा है कि मैं तुझसे जल्दी ही मिलूँगा। तब हम आमने-सामने बातें कर सकेंगे। ¹⁵शांति तुम्हारे साथ रहे। तेरे सभी मित्रों का तुझे नमस्कार पहुँचे। वहाँ हमारे सभी मित्रों को निजी तौर पर नमस्कार कहना।